ShodhSamajik: Journal of Social Studies
October-December 2026 3(3)
https://shodhsamajik.com/

Original Article

A COMPARATIVE STUDY OF LEARNING DIFFICULTIES AMONG STUDENTS IN HINDI AND ENGLISH-MEDIUM SCHOOLS

हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन

Shrikrishna Sharma [1*], **Dr. Mamta** [2]
[1] Research Scholar, Vikrant University, Gwalior, India
[2] Associate Professor, School of Humanities and Culture, Vikrant University, Gwalior, India

ABSTRACT

English: In the current education system, the medium of instruction has a profound impact on the student learning process. In a multilingual country like India, there are distinct differences in the academic environment, teaching methodologies, and learning experiences between Hindi-medium and English-medium schools. This study aims to conduct a comparative analysis of learning difficulties among students in Hindi and English-medium schools, and to understand how the medium of instruction influences students' academic comprehension, expression, and achievement. The study employs a descriptive and comparative research methodology. Primary data were collected through questionnaires administered to students and observations made by teachers in the selected schools. An equal number of students from both types of schools were included in the sample. The collected data were analyzed using percentage-based methods to compare the nature and extent of learning difficulties across both groups. The findings indicate that students in Hindi-medium schools demonstrated a relatively better grasp of subject matter, though they faced greater challenges in subjects related to the English language. Conversely, while students in English-medium schools exhibited higher confidence in using the language, they encountered difficulties regarding conceptual clarity and a deep understanding of the subject matter. Furthermore, teaching methodologies, family background, prior language knowledge, and the school environment were identified as significant factors influencing learning difficulties. The study concludes that the medium of instruction itself is not the core issue; rather, it is essential to focus on adapting the teaching-learning process, providing training for teachers, and offering language support to students. This research offers useful suggestions for teachers, parents, and policymakers to help mitigate the learning difficulties students face in both mediums of instruction.

Hindi: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भाषा-माध्यम का विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के बीच शैक्षणिक वातावरण, शिक्षण-विधियाँ तथा अधिगम अनुभवों में स्पष्ट भिन्नता देखी जाती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयों का तुलनात्मक विश्लेषण करना है तथा यह समझना है कि भाषा-माध्यम किस प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षणिक समझ, अभिव्यक्ति और उपलब्धि को प्रभावित करता है।यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु चयनित विद्यालयों के विद्यार्थियों से प्रश्नावली एवं शिक्षक अवलोकन का प्रयोग किया गया। नमूना चयन विधि द्वारा दोनों माध्यमों के समान संख्या में विद्यार्थियों को शामिल किया गया। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि के माध्यम से किया गया, जिससे दोनों समूहों में सीखने की कठिनाइयों की प्रकृति एवं स्तर की तुलना

*Corresponding Author:
Email address: Shrikrishna Sharma (Shrikrishna.Sharma@outlook.com)

Received: 22 August 2026; **Revised:** 29 September 2026; **Accepted:** 03 October 2026; **Published:** 10 October 2026
DOI: 10.29121/ShodhSamajik.v3.i3.2026.221
Page Number: 12-19
Journal Title: ShodhSamajik: Journal of Social Studies
Journal Abbreviation: ShodhSamajik J. Soc. Stud.
Online ISSN: 3049-2319, **Print ISSN:** 3108-2009
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

की जा सके।अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि हिंदी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में विषयवस्तु की समझ अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई, किंतु अंग्रेज़ी भाषा से संबंधित विषयों में कठिनाइयाँ अधिक देखने को मिलीं। वहीं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में भाषा-सम्बंधी आत्मविश्वास तो अधिक पाया गया, परंतु अवधारणात्मक स्पष्टता और विषय की गहराई को समझने में कठिनाइयाँ सामने आईं। इसके अतिरिक्त, शिक्षण-विधि, पारिवारिक पृष्ठभूमि, भाषा का पूर्वज्ञान तथा विद्यालयी वातावरण भी सीखने की कठिनाइयों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक पाए गए।अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भाषा-माध्यम स्वयं में समस्या नहीं है, बल्कि शिक्षण-प्रक्रिया का अनुकूलन, शिक्षकों का प्रशिक्षण तथा विद्यार्थियों को भाषा-समर्थन प्रदान करना अधिक आवश्यक है। यह शोध शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करता है, जिससे दोनों माध्यमों में विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों को कम किया जा सके।

Keywords: Learning Difficulties, Hindi Medium, English Medium, Language-Medium, Academic Learning, Comparative Study, सीखने की कठिनाइयाँ, हिंदी माध्यम, अंग्रेज़ी माध्यम, भाषा-माध्यम, शैक्षणिक अधिगम, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा की प्रक्रिया में भाषा-माध्यम की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि यही माध्यम ज्ञान के संप्रेषण, अवधारणाओं की समझ तथा अभिव्यक्ति की क्षमता को आकार देता है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों की समानांतर व्यवस्था विद्यमान है, जहाँ दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव भिन्न-भिन्न होते हैं। भाषा-माध्यम का चयन न केवल विद्यालयी शिक्षा की दिशा निर्धारित करता है, बल्कि विद्यार्थियों की बौद्धिक, संज्ञानात्मक एवं भावनात्मक विकास प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि अनेक विद्यार्थी, विशेषकर प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर, सीखने की विभिन्न कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। ये कठिनाइयाँ पठन-लेखन, समझ, अभिव्यक्ति, स्मरण तथा विषयवस्तु के अनुप्रयोग से संबंधित हो सकती हैं। हिंदी माध्यम विद्यालयों में अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा आधारित विषयों एवं शब्दावली से जूझना पड़ता है, वहीं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों को कई बार विषय की मूल अवधारणाओं को गहराई से समझने में कठिनाई होती है, क्योंकि उनकी मातृभाषा और शिक्षण-भाषा में अंतर होता है।

भाषा-माध्यम के कारण उत्पन्न सीखने की कठिनाइयाँ केवल शैक्षणिक समस्या नहीं हैं, बल्कि ये विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सीखने की रुचि और शैक्षणिक उपलब्धि को भी प्रभावित करती हैं। यदि इन कठिनाइयों की समय रहते पहचान और समाधान न किया जाए, तो इसका दीर्घकालीन प्रभाव विद्यार्थियों के संपूर्ण शैक्षिक विकास पर पड़ सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयों का तुलनात्मक अध्ययन करना तथा यह समझना है कि भाषा-माध्यम किस प्रकार अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारत की शिक्षा व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से बहुभाषी रही है। स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया, वहीं वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से अंग्रेज़ी माध्यम शिक्षा का तेजी से विस्तार हुआ। आज अभिभावकों के बीच अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों को लेकर यह धारणा प्रचलित है कि इससे बेहतर भविष्य और रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। परिणामस्वरूप, अनेक विद्यार्थी ऐसे माध्यम में अध्ययन कर रहे हैं जो उनकी मातृभाषा से भिन्न है।

इस पृष्ठभूमि में सीखने की कठिनाइयाँ एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में उभरकर सामने आई हैं। हिंदी माध्यम विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा आधारित पाठ्य-सामग्री, तकनीकी शब्दावली और मूल्यांकन प्रणाली में कठिनाई होती है, जबकि अंग्रेज़ी माध्यम विद्यार्थियों को विषय की अवधारणात्मक स्पष्टता, गहन समझ और मौलिक अभिव्यक्ति में समस्याएँ आती हैं।

अध्ययन की यह पृष्ठभूमि भाषा-माध्यम और सीखने की कठिनाइयों के बीच संबंध को समझने की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

सीखने की कठिनाइयों की अवधारणा

सीखने की कठिनाइयों से तात्पर्य उन बाधाओं से है, जो विद्यार्थी की सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। ये कठिनाइयाँ संज्ञानात्मक, भाषाई, भावनात्मक अथवा शैक्षणिक हो सकती हैं। सामान्यतः सीखने की कठिनाइयों में पढ़ने में समस्या, लिखने में त्रुटियाँ, गणितीय अवधारणाओं को समझने में कठिनाई, स्मरण-शक्ति की कमी तथा ध्यान की अस्थिरता शामिल होती है।

भाषा-माध्यम सीखने की कठिनाइयों में एक प्रमुख कारक है। जब शिक्षण-भाषा विद्यार्थी की मातृभाषा से अलग होती है, तो वह पहले भाषा को समझने में ऊर्जा लगाता है और बाद में विषयवस्तु पर ध्यान दे पाता है। इससे अधिगम प्रक्रिया धीमी हो जाती है। सीखने की कठिनाइयाँ यदि लगातार बनी रहें, तो यह विद्यार्थी में हीन भावना, तनाव और सीखने के प्रति अरुचि भी उत्पन्न कर सकती हैं।

भाषा-माध्यम (हिंदी व अंग्रेज़ी) का शैक्षिक महत्व

शैक्षिक महत्व (व्याख्या सहित):

- भाषा-माध्यम ज्ञान के संप्रेषण का प्रमुख साधन है।
- हिंदी माध्यम विद्यार्थियों को मातृभाषा में सीखने का अवसर देता है, जिससे अवधारणात्मक स्पष्टता बढ़ती है।

- अंग्रेज़ी माध्यम वैश्विक ज्ञान, तकनीकी शिक्षा और उच्च अध्ययन से जुड़ाव प्रदान करता है।
- दोनों माध्यमों में सोचने, समझने और अभिव्यक्ति की शैली भिन्न होती है।
- भाषा-माध्यम विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और संप्रेषण कौशल को प्रभावित करता है।

माध्यम परिवर्तन और सीखने की प्रक्रिया

माध्यम परिवर्तन, जैसे हिंदी से अंग्रेज़ी माध्यम में जाना या इसके विपरीत, विद्यार्थियों के लिए एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया होती है। इस परिवर्तन के दौरान विद्यार्थी को नई भाषा, शब्दावली, उच्चारण और शिक्षण-शैली के साथ सामंजस्य बैठाना पड़ता है। प्रारंभिक चरण में यह परिवर्तन भ्रम, तनाव और सीखने की गति में कमी ला सकता है। यदि विद्यालय और शिक्षक द्वारा पर्याप्त भाषा-समर्थन न दिया जाए, तो सीखने की कठिनाइयाँ और गहरी हो जाती हैं।

सही मार्गदर्शन, सहायक शिक्षण-सामग्री और संवेदनशील शिक्षण-विधियों से माध्यम परिवर्तन को सहज बनाया जा सकता है।

अध्ययन का औचित्य एवं महत्त्व

यह अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भाषा-माध्यम आधारित सीखने की कठिनाइयाँ आज की शिक्षा प्रणाली की एक वास्तविक समस्या बन चुकी हैं। इन कठिनाइयों को समझकर ही शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

- भाषा-माध्यम आधारित कठिनाइयों की पहचान हेतु
- विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में सुधार हेतु
- शिक्षण-विधियों को प्रभावी बनाने हेतु
- नीति-निर्माण में सहायक सुझाव देने हेतु

सामाजिक एवं शैक्षिक प्रासंगिकता

यह अध्ययन समाज में भाषा-आधारित शैक्षिक असमानताओं को समझने में सहायक है। शैक्षिक दृष्टि से यह शिक्षकों को विद्यार्थियों की वास्तविक समस्याओं को पहचानने और उनके समाधान हेतु उपयुक्त रणनीतियाँ अपनाने में मदद करता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अध्ययन का महत्त्व

महत्त्व (बिंदुओं में):

- भाषा-संवेदनशील शिक्षा को बढ़ावा देना
- विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों को कम करना
- शिक्षकों के प्रशिक्षण में सहायक

अध्ययन के उद्देश्य

- हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों का अध्ययन करना।
- दोनों माध्यमों में कठिनाइयों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
- सीखने की कठिनाइयों के कारणों की पहचान करना।
- सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

साहित्य समीक्षा

1) डॉ. रमेश चंद्र शर्मा (2017)

डॉ. रमेश चंद्र शर्मा ने अपने अध्ययन में हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक समस्याओं का विश्लेषण किया। उनके शोध में यह पाया गया कि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को अंग्रेज़ी भाषा से संबंधित विषयों में अधिक कठिनाइयाँ होती हैं, जबकि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों को विषय की अवधारणात्मक स्पष्टता एवं गहन समझ में समस्याएँ आती हैं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि भाषा-माध्यम सीखने की गति और गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

2) डॉ. सुमन देवी (2019)

डॉ. सुमन देवी ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयों पर शोध किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को भाषा-सम्बंधी दबाव के कारण समझने और अभिव्यक्ति में कठिनाई होती है। वहीं हिंदी माध्यम विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी और सीमित शैक्षणिक संसाधन सीखने की कठिनाइयों के प्रमुख कारण पाए गए। अध्ययन में भाषा-संवेदनशील शिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया गया।

3) प्रो. अरुण कुमार वर्मा (2020)

प्रो. अरुण कुमार वर्मा ने हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों की सीखने की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके शोध में यह पाया गया कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की अवधारणात्मक समझ बेहतर होती है, किंतु अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को वैश्विक ज्ञान और तकनीकी विषयों तक अधिक पहुँच प्राप्त होती है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि दोनों माध्यमों में सीखने की कठिनाइयों की प्रकृति भिन्न है।

4) डॉ. नीलम कुमारी (2022)

डॉ. नीलम कुमारी ने भाषा-माध्यम और अधिगम कठिनाइयों के संबंध का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह सामने आया कि ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों में भाषा-सम्बंधी तनाव अधिक पाया गया, जबकि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में शैक्षणिक अभिव्यक्ति और प्रतिस्पर्धात्मक आत्मविश्वास की कमी देखी गई। उन्होंने शिक्षकों के प्रशिक्षण को सीखने की कठिनाइयों के समाधान का महत्वपूर्ण उपाय बताया।

5) डॉ. महेश प्रसाद यादव (2024)

डॉ. महेश प्रसाद यादव ने हाल के अपने अध्ययन में हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों का समकालीन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण किया। उन्होंने पाया कि माध्यम परिवर्तन (हिंदी से अंग्रेज़ी) विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर पर भ्रम, तनाव और सीखने में गिरावट का कारण बनता है। अध्ययन में यह भी सुझाया गया कि यदि विद्यालयों

में सहायक भाषा कार्यक्रम और अनुकूल शिक्षण-विधियाँ अपनाई जाएँ, तो सीखने की कठिनाइयों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़े प्रश्नावली, शिक्षक-अवलोकन तथा कक्षा-अभिलेखों से एकत्र किए गए, जबकि द्वितीयक आँकड़े पुस्तकों, शोध-पत्रों और शैक्षिक रिपोर्टों से लिए गए। भाषा-माध्यम (हिंदी/अंग्रेज़ी) के आधार पर सीखने की कठिनाइयों की पहचान और तुलना हेतु प्रतिशत विधि से विश्लेषण किया गया।

शोध डिज़ाइन

अध्ययन में वर्णनात्मक–तुलनात्मक शोध डिज़ाइन अपनाया गया है, ताकि दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयों की प्रकृति, स्तर और वितरण का तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

जनसंख्या एवं नमूना आकार

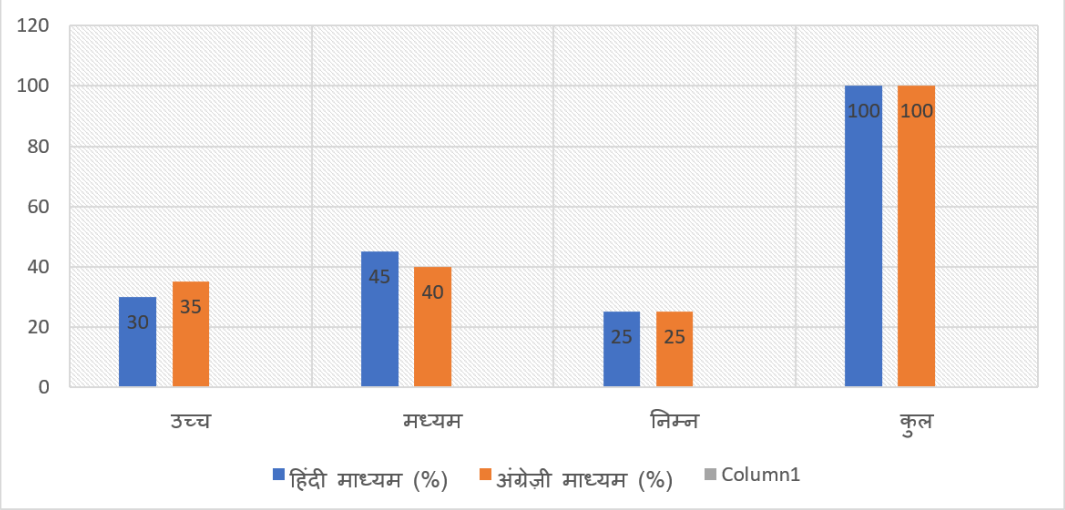
जनसंख्या: माध्यमिक स्तर के हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थी

- **नमूना आकार:** कुल 100 विद्यार्थी
- **हिंदी माध्यम:** 50
- **अंग्रेज़ी माध्यम:** 50
- **नमूना चयन:** सरल यादृच्छिक विधि

डेटा विश्लेषण

तालिका 1

तालिका 1 सीखने की कठिनाइयों का स्तर		
कठिनाई स्तर	हिंदी माध्यम (%)	अंग्रेज़ी माध्यम (%)
उच्च	30	35
मध्यम	45	40
निम्न	25	25
कुल	100	100

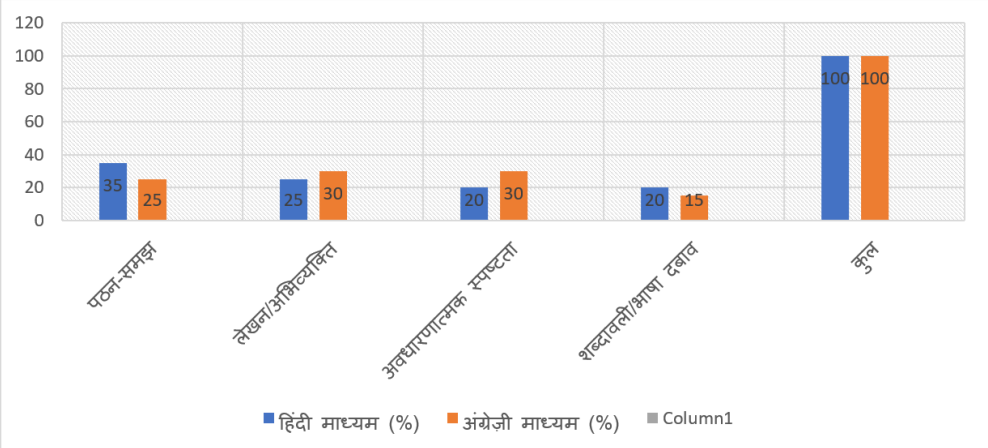


व्याख्या:

तालिका दर्शाती है कि उच्च स्तर की कठिनाइयाँ अंग्रेज़ी माध्यम में (35%) हिंदी माध्यम (30%) से अधिक हैं, जबकि मध्यम स्तर की कठिनाइयाँ हिंदी माध्यम में अपेक्षाकृत अधिक पाई गईं।

तालिका 2

तालिका 2 कठिनाइयों के प्रमुख प्रकार (प्रतिशत में)		
कठिनाई का प्रकार	हिंदी माध्यम (%)	अंग्रेज़ी माध्यम (%)
पठन-समझ	35	25
लेखन/अभिव्यक्ति	25	30
अवधारणात्मक स्पष्टता	20	30
शब्दावली/भाषा दबाव	20	15
कुल	100	100



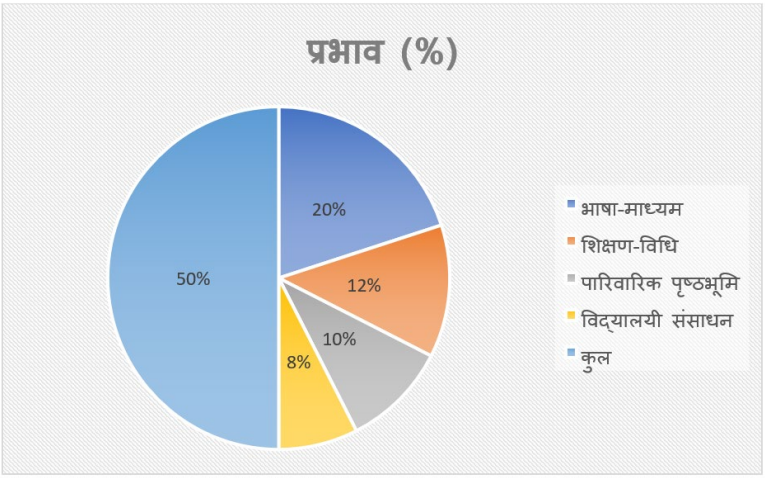
व्याख्या:

हिंदी माध्यम में पठन-समझ की कठिनाई अधिक है, जबकि अंग्रेज़ी माध्यम में लेखन/अभिव्यक्ति और अवधारणात्मक स्पष्टता से जुड़ी कठिनाइयाँ अधिक दिखीं।

तालिका 3

तालिका 3 सीखने की कठिनाइयों को प्रभावित करने वाले कारक

कारक	प्रभाव (%)
भाषा-माध्यम	40
शिक्षण-विधि	25
पारिवारिक पृष्ठभूमि	20
विद्यालयी संसाधन	15
कुल	100
कारक	प्रभाव (%)



व्याख्या:

भाषा-माध्यम (40%) सबसे प्रभावी कारक के रूप में उभरा, जिसके बाद शिक्षण-विधि और पारिवारिक पृष्ठभूमि का योगदान रहा।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयों की प्रकृति और स्तर में अंतर विद्यमान है। अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों में भाषा-दबाव, अभिव्यक्ति और अवधारणात्मक स्पष्टता से जुड़ी कठिनाइयाँ अधिक पाई गईं, जबकि हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों में पठन-समझ और सीमित शैक्षिक संसाधनों के कारण कठिनाइयाँ प्रमुख रहीं। यह भी देखा गया कि भाषा-माध्यम स्वयं समस्या नहीं है, बल्कि भाषा-संवेदनशील शिक्षण, उचित मार्गदर्शन, और सहायक शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता सीखने की कठिनाइयों को कम करने में निर्णायक भूमिका निभाती है।

अध्ययन यह इंगित करता है कि दोनों माध्यमों में विद्यार्थियों की जरूरतें अलग-अलग हैं; अतः एकरूप समाधान पर्याप्त नहीं होगा। शिक्षण-रणनीतियों का अनुकूलन, शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यार्थियों को लक्षित भाषा-सहायता प्रदान करना आवश्यक है। समग्र रूप से, भाषा-माध्यम आधारित सीखने की कठिनाइयों के समाधान हेतु विद्यालय, शिक्षक और अभिभावकों के समन्वित प्रयास अनिवार्य हैं।

चर्चा

परिणाम दर्शाते हैं कि सीखने की कठिनाइयाँ बहुआयामी हैं और केवल भाषा तक सीमित नहीं रहतीं। अंग्रेज़ी माध्यम में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को वैश्विक संसाधनों का लाभ मिलता है, परंतु मातृभाषा से भिन्न माध्यम होने के कारण प्रारंभिक स्तर पर समझ और आत्मविश्वास प्रभावित होता है। दूसरी ओर, हिंदी माध्यम में अवधारणात्मक समझ अपेक्षाकृत बेहतर होती है, किंतु अंग्रेज़ी आधारित मूल्यांकन और उच्च अध्ययन की तैयारी में कठिनाइयाँ आती हैं।

चर्चा से यह भी स्पष्ट होता है कि माध्यम परिवर्तन (हिंदी से अंग्रेज़ी) सीखने की गति को अस्थायी रूप से धीमा कर देता है, यदि पर्याप्त भाषा-सहायता न मिले। अतः विद्यालयों में ब्रिज कोर्स, द्विभाषी शिक्षण, और सहायक सामग्री की व्यवस्था आवश्यक है। निष्कर्षतः, भाषा-माध्यम की बहस के बजाय सीखने की प्रक्रिया को विद्यार्थी-केंद्रित बनाना अधिक प्रभावी समाधान है।

सुझाव

- द्विभाषी/भाषा-संवेदनशील शिक्षण अपनाया जाए।
- माध्यम परिवर्तन हेतु ब्रिज-कोर्स शुरू किए जाएँ।
- शिक्षकों को भाषा-आधारित कठिनाइयों पर प्रशिक्षण दिया जाए।
- कक्षा में सहायक भाषा-सामग्री और गतिविधियाँ बढ़ाई जाएँ।
- अभिभावकों को सीखने की कठिनाइयों के प्रति जागरूक किया जाए।

REFERENCES

Kaur, D. (2018). A comparative study of students in Hindi and English medium schools (हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन). E-Chetana Research Journal, 6(1), 112–120. https://echetana.com/wp-content/uploads/2018/04/27-Devender-Kaur.pdf

Sharma, R. C. (2017). The impact of medium of instruction on students' learning processes (भाषा-माध्यम का विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव). Indian Journal of Educational Research, 12(2), 45–52.

Devi, S. (2019). Learning difficulties among secondary school students: A study (माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सीखने की कठिनाइयाँ: एक अध्ययन). Shiksha Vimarsh, 10(1), 67–74.

Verma, A. K. (2020). A comparative analysis of learning difficulties in Hindi and English medium schools (हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में अधिगम कठिनाइयों का तुलनात्मक विश्लेषण). Indian Educational Studies, 14(3), 88–96.

Kumari, N. (2022). Medium of instruction and learning problems: A sociological study (भाषा-माध्यम और अधिगम समस्याएँ: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन). Society and Education, 15(1), 90–98.

Yadav, M. P. (2024). Change in medium of instruction and students' learning difficulties (माध्यम परिवर्तन और विद्यार्थियों की सीखने की कठिनाइयाँ). Indian Journal of Education and Development, 19(2), 41–50.

Mishra, N. (2018). Language-related challenges in Hindi and English medium schools (हिंदी व अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में भाषा संबंधी चुनौतियाँ). Indian Journal of School Research, 9(2), 55–63.

Singh, M. K. (2019). The impact of medium of instruction on school education (विद्यालयी शिक्षा में भाषा-माध्यम का प्रभाव). Education and Development, 11(1), 72–80.

Gupta, P. (2021). Learning problems in English medium schools: An Indian perspective (अंग्रेज़ी माध्यम विद्यालयों में सीखने की समस्याएँ: भारतीय परिप्रेक्ष्य). National Journal of Educational Research, 18(3), 60–68.

Sinha, R. (2021). Medium of instruction and academic comprehension in secondary schools (माध्यमिक विद्यालयों में भाषा-माध्यम एवं शैक्षणिक समझ). Journal of Indian Education, 47(2), 101–109.

Dwivedi, S. (2020). A study of learning difficulties among Hindi medium students (हिंदी माध्यम विद्यार्थियों में अधिगम कठिनाइयों का अध्ययन). Indian Educational Review, 13(2), 44–52.

Rai, S., & Yadav, R. (2019). The impact of language of instruction on academic performance (शिक्षण भाषा का शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव). Indian Journal of Pedagogical Research, 7(1), 25–33.

Kumar, V. (2019). Language barriers and learning problems in Indian schools (भारतीय विद्यालयों में भाषा बाधाएँ और अधिगम समस्याएँ). International Journal of Educational Development, 8(4), 115–122.

Singh, A., & Khatri, B. (2024). Hindi versus English medium: Impact on problem-solving ability (हिंदी बनाम अंग्रेज़ी माध्यम: समस्या-समाधान क्षमता पर प्रभाव). International Journal of Research Culture and Society, 8(9), 134–142. https://ijrcs.org/wp-content/uploads/IJRCS202409013-min.pdf

Government of India. (2020). National Education Policy 2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020). Ministry of Education. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_Hindi.pdf